

Indian Nation 24.12.67 Book Reviews

MANU- KA - SANTAN (Maithili) by Prof Ramdeva Jha; published by the Bharatee Prakashan-Kendra, Darbhanga; Pages 88; price Rs. 1.75 only. The book which derives its title from its first story, contains altogether seven original stories by the writer. Almost all the stories depict the socio-economic conditions of the land, for which and in which they have been written. Treatment is impressive, style is natural and graceful and local colour serves to have put an indelible stamp upon every characterisation throughout. The keen insight of the writer into the burning problems of the land is indeed worth appreciating; and it is hoped that the technique he has adopted, for presenting the stories would, one day, make a landmark in the field of modern Maithilic stories.

groom for his daughter has turned out, despite all the illusionary ideals of the so-called high ups to be the formidable cancer to the society. Here in this play, one Ramkumar has been depicted as revolting against the wishes of his greedy father and marrying 'Seeta' — the daughter of one Janak without any dowry. It is after marriage that the father of Ramkumar presses his son to take a second wife, but, to the utter dismay of all, Ramkumar takes poison to end his life. Fortunately, a doctor-friend saves Ramkumar, and now his parents, all full of remorse and repentance big apology from Ram Kumar and his ideal wife, and thus convert their hellish hearth into a celestial abode.

The play is impressive and easily managable for the stage.

—SINGH

KUHESA (Maithili); by Sjt. Babu Saheb Chaudhry; published by Mithila Gramodaya Parishad, Vill. Karaj, P. O. Karajapatti; Dt. Darbhanga; pages 101; price Rs. 2.50 only. Here in this drama the marriage problems of Mithila have been most vividly painted; and the pathetic helplessness of a bride's father, who cannot naturally afford to purchase a suitable bride-

Indian Nation
24.12.67

आर्यावर्त 23-7-67 पुस्तक-परिचय

जगज्ज्योतिर्मल्ल कृत हरगौरी विवाह नाटक

ग्रंथकार : डाक्टर रामदेव झा, प्रकाशक-मिथिला रिसर्च सोसाइटी, लहेरिया सराय, दरभंगा, पृष्ठ-संख्या अठ्ठासी, मूल्य: तीन रुपये। नेपालके मल्लवंशीय महाराजाधिराज जगज्ज्योतिर्मल्लकृत 'हरगौरी विवाह' नामक संस्कृत मिश्रित मैथिली नाटक अबतक पुस्तक रूप में अनूपलब्ध था। इसकी एकमात्र पाण्डुलिपि कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय पुस्तकालयमें सुरक्षित थी। उसी पाण्डुलिपिसे प्राप्त माइक्रोफिल्मके आधारपर डाक्टर रामदेव झा ने मैथिली साहित्यको यह अनूपम कृति उपलब्ध करायी है।

'हरगौरी विवाह' को चम्पू काव्यकी श्रेणीमें भी रखा जा सकता है। इसमें गद्य-पद्य दोनोंके ही माध्यमसे कथा-साज पुरी की गयी है। साहित्यकी विधाकी दृष्टिसे ही नहीं, भाषाकी दृष्टिसे भी इस कृतिमें 'चम्पू' चरित्रका निर्वह किया गया है। गीतोंमें प्रायः सर्वत्र मूल नाटककारने राग-ताल-निर्देश कर दिये हैं, फलतः गायकोंके लिए भी इनका आकर्षण बढ़ गया है। इस मैथिली नाटककी पाण्डुलिपि नेवारीलिपिमें उपलब्ध है, जो देवनागरी प्रभावित मिथिलाक्षर ही है। डाक्टर रामदेव झा ने मैथिली साहित्यके सामान्य पाठकों एवं अनुसंधितसुत्रोंको यह अमूल्य रचना उपलब्ध करा साहित्यका बहुत बड़ा उपकार किया है। डाक्टर झा ने मूल कृतिकी व्याख्या एवं समालोचना प्रस्तुत करनेके अतिरिक्त अन्य सम्बद्ध शोध संदर्भों का भी यथासाध्य विश्लेषण इस पुस्तकमें उपलब्ध करा दिया है, जिसमें इसकी उपयोगिता और भी बढ़ गयी है। व्याख्याकी भाषा

तामलनाडु

लेखक-बालगौरी रेड्डी, प्रकाशक राजपाल एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली-६, प्रथम संस्करण: २६७०, पृष्ठ संख्या: २२८, मूल्य-३) रुपये मात्र। प्रस्तुत पुस्तक भारत-देश में मालाके अन्तर्गत प्रकाशित तीसरी कड़ी है। तमिलनाडु मद्रास राज्यका आधुनिक नाम है। तमिल भाषा भाषियोंका नगर या वासस्थान, यहाँ इस शब्दकी व्युत्पत्ति है।

सरल और शास्त्रीय है। कई स्थलों पर पुस्तकमें प्रुफ-सम्बन्धी अशुद्धियाँ रह गयी हैं जिनपर ग्रंथकारको ध्यान देना चाहिये था।—मा० प्र०